

दि आक्सफोर्ड कॉलेज आफ

नाम : हमजा अली बेग

कक्षा : तीसरा सेम वि.एस.सी

विभाग : पी. एम. सीएस

पंजीकरण संख्या : 19RNS85248

विषय : ग्लोबल वार्मिंग

को प्रस्तुत : हिंदी विभाग

डॉ सुरेश शर्मा

# INDEX

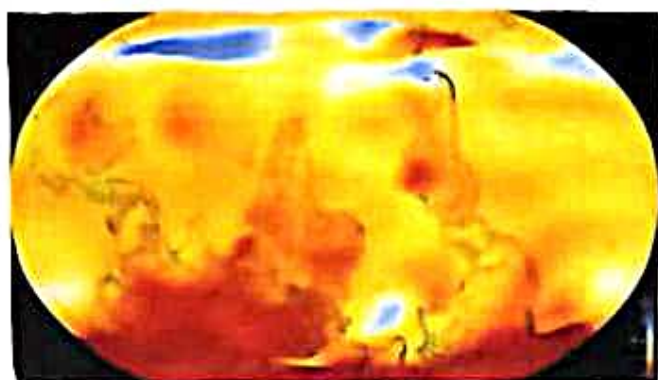
<u>S.No</u>	<u>Topic</u>	<u>Pg No</u>
1)	ग्लोबल वार्मिंग	1-2
2)	ग्लोबल वार्मिंग के कारण	3-8
3)	ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव	9
4)	CO <sub>2</sub> का प्रभाव	10-11
5)	घातक परिणाम	12
6)	ग्लोबल वार्मिंग का समाधान/ रोकने का उपाय	13-15
7)	निष्कर्ष	16



## ग्लोबल वार्मिंग

पृथ्वी के सतह पर औसतन तापमान का बढ़ना ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है। ग्लोबल वार्मिंग मुख्य रूप से मानव प्रेरक कारकों के कारण होता है। औद्योगीकरण में ग्रीन हाउस गैसों का अनियंत्रित उत्सर्जन तथा जीवाश्म ईंधन का जलना ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। ग्रीन हाउस गैस वायु संचलन से सूर्य की गर्मी को वापस जाने से सोकता है। यह एक प्रकार के प्रभाव है जिसे "ग्रीन हाउस गैस प्रभाव" के नाम से जाना जाता है। इसके फलस्वरूप पृथ्वी के सतह पर तापमान बढ़ रहा है। पृथ्वी के सतह पर तापमान बढ़ रहा है। पृथ्वी के सतह पर बढ़ने तापमान के फलस्वरूप पर्यावरण प्रभावित होता है। अतः इस पर ध्यान देना आवश्यक है।

ग्लोबल वार्मिंग पृथ्वी के तापमान के स्तर और वृद्धि है। दुनिया भर में इंसानों की कुछ ध्यान देने योग्य आदतों के कारण पृथ्वी की सतह दिन - ब - दिन गर्म होती जा रही है।





प्रति करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का साथ  
उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का साथ  
कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पृथ्वी पर  
कार्बन डाइऑक्साइड गैस की मात्रा लगातार बढ़ी  
है। वैज्ञानिकों द्वारा  $CO_2$  के उत्सर्जन और तापम  
न वृद्धि में गहरा सम्बन्ध बताया जाता है।  
सन 2006 में नाक डाक्यूमेंट्री फिल्म तापमान  
वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन पर केंद्रित थी। इस  
फिल्म में मुख्य भूमिका में थे - अमेरिकी  
उपराष्ट्रपति। अल गोर और इस फिल्म का निर्दे  
शन डेविड गुग्नेम ने किया था। इस फिल्म  
में ग्लोबल वार्मिंग को नाक विभीषिक की तरह  
दर्शाया गया जिसका प्रमुख कारण मानव गतिवि  
धि जनित कार्बन वार्मिंग को नाक विभीषिका  
की तरह दर्शाया गया, जिसका कारण मानव  
गतिविधि की तरह दर्शाया गया, जिसका कारण  
मानव गतिविधि जनित कार्बन डाइऑक्साइड ( $CO_2$ )  
गैस माना गया।

भारतीय अंतरिक्ष नावेंसी द्वारा इससे के  
पूर्व चेंस - रमैन और भौतिकविद प्रा. यू. आर

जाता है । और इस कारण से पृथ्वी के तापमान में वृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है । प्रो. राव के निष्कर्ष के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग में इस प्रक्रिया का 40 प्रतिशत योगदान है जबकि कॉस्मिक विकिरण सम्बन्धी जलवायु ताप की प्रक्रिया मानव गतिविधि जनित नहीं है और न ही मानव इसे संचालित कर सकता है । इस तरह यह शोध आई पी सी सी के इस निष्कर्ष का खंडन करता है कि ग्लोबल वार्मिंग में 90 प्रतिशत योगदान मानव का है । अगर ग्लोबल वार्मिंग के अन्य कारणों का अध्ययन किया जाय तो ग्लोबल वार्मिंग में मानव - गतिविधियों का योगदान आई पी सी सी की रिपोर्ट की अपेक्षा बहुत कम होगा । प्रो राव के इस शोध - पत्र के प्रकाशन के ठीक दो दिन बाद विश्व के प्रख्यात वैज्ञानिक जर्नल नैचर में युनिवर्सिटी ऑफ़ लीड्स के प्रो. गैरिथ शोफर्ड का शोध - पत्र प्रकाशित हुआ , जिसमें कहा गया है कि ग्रीनलैंड की बर्फ को पिघलाने में उस समय से कहीं अधिक समय लगेगा जितना की आई . पी . सी . सी . की चौथी रिपोर्ट में कहा गया



राव अपने शोध पत्र में लिखते हैं कि अत-  
-रिक्त से पृथ्वी पर आपतित हो रहा है। अगर  
सूरज की क्रिया शीलता बढ़ती है तो ब्रह्माण्ड  
से आने वाला कॉस्मिक विकिरण निचले स्तर के  
बादलों के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाता  
है। इस बात की पेशकश सबसे पहले स्वेन्स-  
-मार्क और क्रिस्टेन्सन नामक वैज्ञानिकों ने  
की थी। निचले स्तर के बादल सूरज से आने  
वाले विकिरण को परावर्तित कर देते हैं। जिस  
कारण से पृथ्वी पर सूरज से आने वाले विकिर-  
-ण के साथ आई जमीं भी परावर्तित होकर  
ब्रह्माण्ड में वापस चली जाती है।

वैज्ञानिकों ने पाया कि सन 1925 से सूरज  
की क्रिया शीलता में लगातार वृद्धि हुई। जिसके  
कारण पृथ्वी पर आपतित होने वाले कॉस्मिक  
में लगभग 9 प्रतिशत कमी आई है। इस  
विकिरण में आई कमी से पृथ्वी पर बनने  
वाले खास तरह के निचले स्तर के बादलों  
के निर्माण में भी कमी आई है। जिससे  
सूरज से आने वाला विकिरण सोख लिया

-मेदार ग्रीन हाउस गैस हैं। ग्रीन हाउस गैसों, वे गैसों होती हैं जो बाहर से मिल रही हैं या ऊष्मा को अपने अंदर सोख लेती हैं। ग्रीन हाउस गैसों का इस्तेमाल सामान्यतः अत्यधिक सर्द इलाकों में उन पौधों के काँच के फाँक बंद घर में रखा जाता है और काँच के घर में ग्रीन हाउस गैस भर दी जाती है। यह गैस सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी सोख लेती है और पौधों को गर्म रखती है। ठीक वही प्रक्रिया पृथ्वी के साथ होती है। सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी की कुछ मात्रा को पृथ्वी द्वारा सोख लिया जाता है। सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी की कुछ मात्रा को पृथ्वी द्वारा सोख लिया जाता है।

इस प्रक्रिया में हमारे पर्यावरण में कैली ग्रीन हाउस गैसों का महत्वपूर्ण योगदान है।

ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइऑक्साइड है, जिसे हम जीवित प्राणी अपने साँस के साथ उत्स



ग्लोबल वार्मिंग पृथ्वी के वायुमंडल के लिए सबसे अधिक चिंता का विषय बन गया है क्योंकि यह निरंतर और स्थिर गिरावट प्रक्रिया के माध्यम से पृथ्वी पर दिन प्रतिदिन जीवन की संभावनाओं का काम कर रहा है। फिर से यह समुद्र के बढ़ते स्तर बाद तूफान, चक्रवात, मौसम परत की क्षति, मौसम के बदलते मिजाज, महामारी के रोगों की आशंका भोजन की कमी, मृत्यु आदि का कारण बन जाता है। इस इसके लिए किसी पाक डकार को दोष नहीं दे सकते। हर इंसान ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते स्तर के लिए जिम्मेदार है जिसे केवल वैश्विक जागरूकता और सभी के प्रयासों से हल किया जा सकता है।

### ग्लोबल वार्मिंग के कारण

ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे अधिक जि-





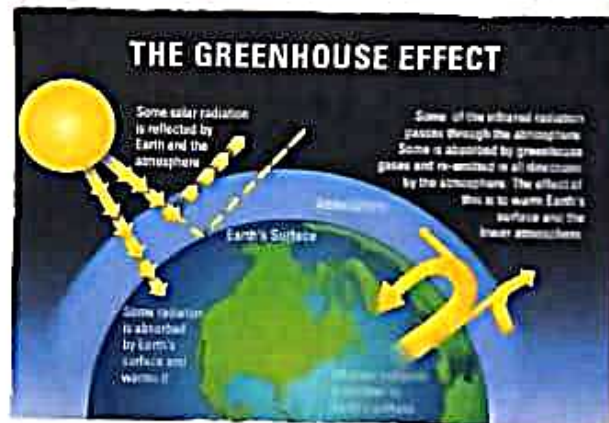


ਪਾਣੀ ਅਤੇ ਹਵਾ ਦੇ ਸੰਤੁਲਨ ਦੇ ਬਿਨਾਂ ਜੀਵ  
ਜੀਵਨ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ। ਇਸ ਲਈ ਪਾਣੀ ਅਤੇ  
ਹਵਾ ਨੂੰ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਰੱਖਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।  
ਪਾਣੀ ਅਤੇ ਹਵਾ ਨੂੰ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਰੱਖਣ  
ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਕੁਝ ਕਦਮ ਚੁੱਕਣੇ ਪੈਣਗੇ।  
ਪਾਣੀ ਅਤੇ ਹਵਾ ਨੂੰ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਰੱਖਣ  
ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਕੁਝ ਕਦਮ ਚੁੱਕਣੇ ਪੈਣਗੇ।



ਪਾਣੀ ਅਤੇ ਹਵਾ  
ਨੂੰ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਰੱਖਣ  
ਲਈ ਸਾਨੂੰ ਕੁਝ  
ਕਦਮ ਚੁੱਕਣੇ ਪੈਣਗੇ।











## STOP GLOBAL WARMING

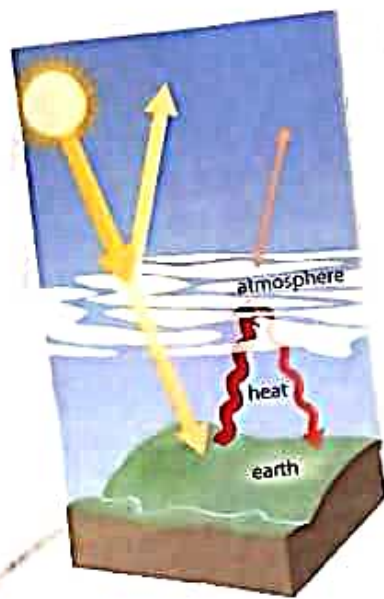
Global warming is one of the biggest problems the world is currently facing. Temperatures continue to rise year after year, causing the polar ice caps to melt and sea levels to rise which could cause major flooding of our towns and cities.

Humans are one of the biggest causes of global warming. Here are a few things you can do to help prevent climate change.

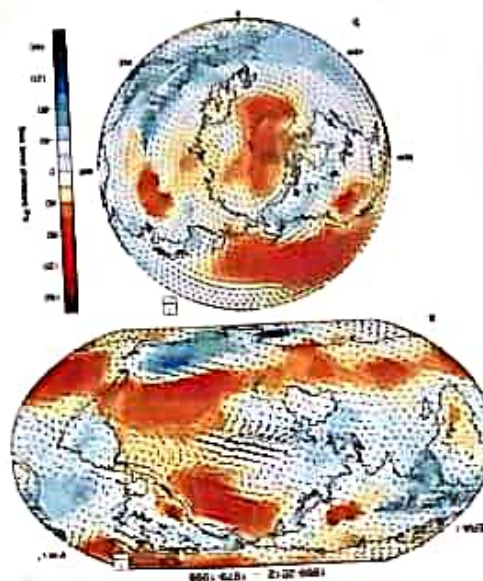
- Walk or cycle to school instead of travelling by car - cars emit gases which are harmful to the environment.
- Recharge, reuse and recycle. Try to cut down on the materials that you use and reuse or recycle the ones that you do use if possible.
- Switch off your TV and computers if you are not using them, as well as all other appliances if they do not need to be on.



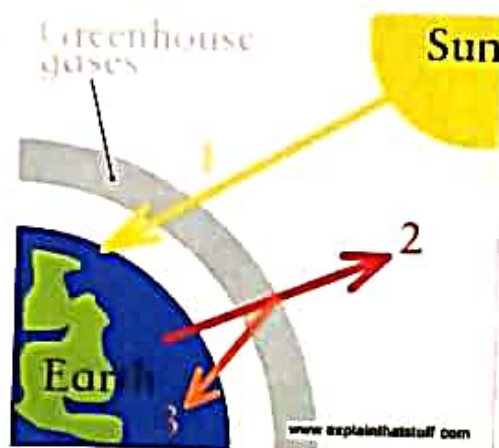








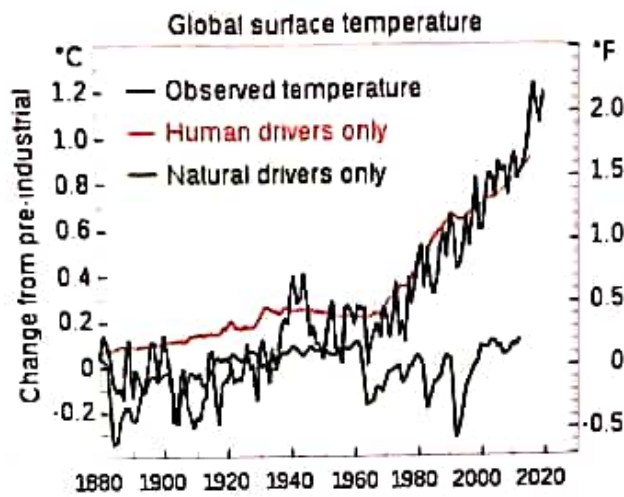












पैमानों और पारिवर्णिकों का तादना है  
 कि जलजल वाणिज्य में कमी के लिए गुरुत।  
 रूप से सी. पाक. सी. जैसों का उत्सर्जन रोकना  
 होगा और इतना लिंग-प्रिया पागर कंडीशनर  
 और इतने लिंग प्रिय पायर कंडीशनर और इतना  
 -रे क्लिनिंग मशीनों का इतनेमान का करना होगा  
 या पौरी मशीनों का उपयोग करना होगा जिससे  
 सी. पाक. सी. जैसों का कम निकली है।

अष्टांगिक  
इनासर्ग  
दी  
निर्गर्ग  
श  
विम

-ने दीना दुजो दीनी वारन हे ३१२ वारन निदान  
 -ने वाना वदना हे १ इना वनाइना मं साइनाव

$$\frac{2133}{71} = \frac{2133}{71} = 30.04225352112676$$

- वा शिव का साक्षात् दर्शन ।

वाहो नं प्र निकलने वने हुनि का प्रभाव  
 बना करने के लिए पर्यावरण मानकों का सखी  
 प्र प्रामन करने दीजा । उदाहरण और संवर्धनकर

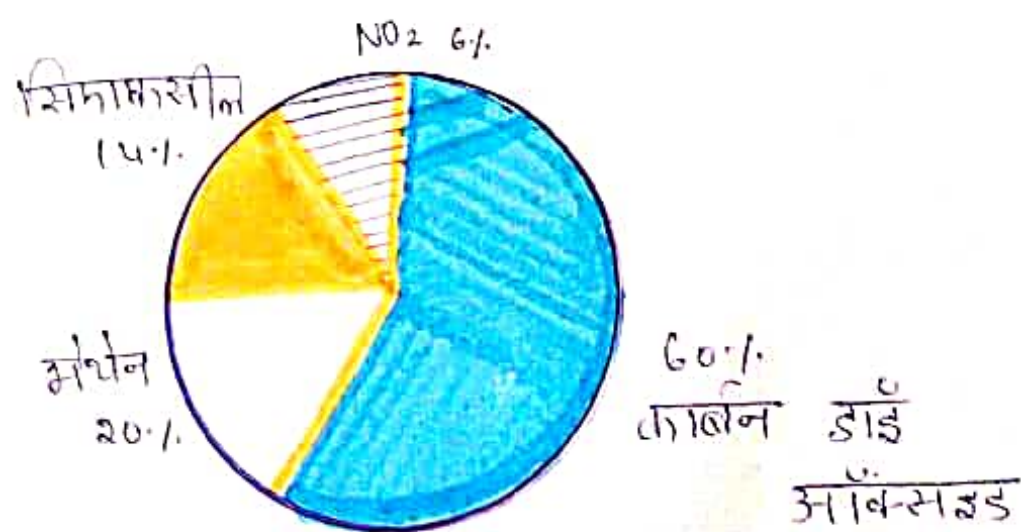
शराशास्त्रानि (इकादश) श्रेष्ठ विद्वान् वान् कथार को  
 पिर श्रेष्ठ शराशास्त्रां नानां नायक वान् वी  
 कोविदा वरुनी हेली और शराशिवला के झाडा  
 -ए. ए. ए. को वरुनी दोनी ।

मोडरन थोफर्ट अपने थोए - पत्र में लिख  
हैं कि बर्क अपेक्षाकृत सुरक्षित हैं, उसे पिछा  
लेने में काफी बल लगा । सन् 1999 में  
इं. बी. के. केना ने अपने थोए के दौरान  
पाया था कि हिमालय जलेशोथर भी अपेक्षा  
कुल सुरक्षित हैं ।

हर्नोकि प्रो. राव के इस थोए के प्रमुख  
आधार वास्तविक विकिरण और निचले स्तर के  
बादलों की निर्माण प्रक्रिया के बीच के अन्तः  
सम्बन्धों की पर कुछ संशोधनों ने इस दिशा  
में थोए भी किया, अगर अब तक अंतरिक्ष से  
पृथ्वी पर आपतित हो रहे वास्तविक विकिरण  
और पृथ्वी पर निचले स्तर के बादलों के निर्मा  
-ण के अन्तः सम्बन्धों पर विश्व के सभी वैज्ञा  
निकों में आलापक भाषा नहीं बन पाई है।  
अहाँ यह बताना भी जरूरी है कि इस पूरे  
मुद्दे पर सही निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये  
'युरोपीय' 'नाटोकीय' अनुसंधान संगठन के लार्ज  
हैड्रोब कोलाइडर की सहायता से वैज्ञानिकों ने



अत्याधिक उत्सर्जन हो रहा है। आकड़ों के आशंका है कि 2020 तक ग्लोबल वार्मिंग में बड़ा उल्लाल आयेगा जो कि पर्यावरण पर बुरा प्रभाव डाल  $CO_2$  के स्तर में बढ़ोत्तरी "ग्रीन हाउस गैस" (जलवाष्प,  $CO_2$ , मीथेन, ओजोन) धार्मिक विकरण को अवशोषित करता है। तथा सभी दिशाओं में विकीर्ण होकर और पृथ्वी के सतह पर वापस आजाते हैं जिससे सतह का तापमान बढ़ कर ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण बनता है।



### हाउस परिणाम

ग्रीन हाउस गैस होती है तो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इन-

जन्तुबल वाणिज्य के पान्तरूप वातावरण के जनतायु में बढ़ती गति का मांसम, काम होता ठंडका मांसम बर्फी के चट्टानों का पिघलना, लोपमान का बढ़ना, हवा परिरक्षारण चेतनी में बदललिनो मांसम के वर्ष का होना, ओजोन परत में छेद, भारी नुकन की हटना, चक्रवात और-हवा, बाद और धरी तरह के अनेक प्रभाव हैं।

वातावरण पर कार्बन डाइऑक्साइड ( $\text{CO}_2$ ) का हानिकारक प्रभाव

पृथ्वी पर  $\text{CO}_2$  की वृद्धि से, निरंतर ऊष्मा तरंगों का बढ़ना, गर्म लहरें तेज पुष्कन की अचानक हटना, अम्लपात्रित और इनचार्टे चक्रवात, ओजोन परत की नुकसान पड़ना, बाद, भारी, बाइडिश, सूखा, ओजोन की कमी, बीमारी तथा मृत-पु इत्यादि जगह जीवन पर काफी बुरा तब अवरक्तों का उपयोग, वनों की कटाई, बिजली की अत्यधिक खपत, प्रिजिन में उपयोग होने वाले गैस इत्यादि के कारणवश वातावरण में  $\text{CO}_2$  का

गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलता रहा तो मवी शताब्दी में पृथ्वी का तापमान डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। अगर नोसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत की चोटें पिटल जायेंगी, समुद्र का जल स्तर कई हिस्से जल - गमना हो जायेंगे, भारी तबाही मचेगी यह तबाही किसी बिद्युद्ध या किसी मोस्ते - रॉड ' के पृथ्वी से टकराने के बाद होने वाली तबाही से भी बढ़कर होगी। हमारे ग्रह पृथ्वी के लिए भी यह स्थिति बहुत हानिकारक होगी।

ग्लोबल वार्मिंग का समाधान (या) रोकने का उपाय है। जो भी हो हाँ ब्रह्मा नहीं चाहता और सबको बेहतर प्रयास करना चाहिए ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को कम करने के लिए। हमें ग्रीन का उत्सर्जन कम करने के लिए। हमें ग्रीन का उत्सर्जन कम करना चाहिए तथा वातावरण में हो रहे कुछ जलवायु परिवर्तन जो वर्षों से चलता आ रहा है उन्हें अपनाने की कोशिश करनी चाहिए।



अध्यास ऊर्जा के उपयोगों पर ध्यान देना होगा  
यानी अगर लोगन से बनने वाली बिजली  
के बदले पला ऊर्जा और और  
पनबिजली पर ध्यान दिया जाय तो वातावा-  
रण भी गर्म करने वाली गैसों पर नियंत्रण  
पाया जातावरण को गर्म करने वाली गैसों  
पर नियंत्रण पाया जा सकता है तथा साथ  
ही लोगों में भी आज लोभ पर रोक लगानी  
होगी ।

### निष्कर्ष

जलबल चार्जिंग तथा चार्ज के अभाव, हीं  
बिजली के स्थान पर स्वच्छ ऊर्जा जैसे और  
ऊर्जा पवन ऊर्जा तथा धूर-बाजिय ऊर्जा द्वारा  
उत्पादित ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए ।  
कोयला, तेल के जलने के स्तर को कम  
करना चाहिए, परिवहन और इलेक्ट्रिक उपकर-  
णों का उपयोग कम चाहिए इससे जलबल  
चार्जिंग का स्तर काफी बढ़ तक कम  
होगा ।

प्रयोगों की भाव-श्रृंखला संपन्न करने का निर्णय लिया है। यह प्रयोग अभी होना ही नहीं संभव हुआ है और मेरे उद्देश्य हैं कि परिणाम आने जल्द शुरू हो जायेंगे। इस प्रयोग को (वर्ना 33) का नाम दिया है। इस प्रयोग में वास्तविक विविधता प्रभाव, जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव आदि विषयों पर अध्ययन और और किया जा रहा है।

### जलजल वाणिज्य के प्रभाव

जलजल वाणिज्य के स्त्रोतों में वृद्धि से साथ और पर जलजल वाणिज्य के प्रभाव देख जा सकता है। के अनुसार मोंटाना जलविद्युत क्षेत्रजल पार्क पर 150 जलविद्युत मोंटाना में पर जलजल वाणिज्य के वृद्धि से वर्तमान में मात्र 25 जलविद्युत जल है। आर्थिक स्तर पर जलवायु में परिवर्तन तथा तापमान, शक्ति-शाली और सार-वृत्त बन जाते हैं। 2012 को 1885 के बाद संलग्न जल वर्ष दर्ज किया है।